Samaj Vigyan Shodh Patrika

Vol. 2, No. XLIV

ISSN 0973-7626, RNI: UPBIL/2005/16107
UGC APPROVED RESEARCH JOURNAL NO. 48215
OCTOBER 2018 - MARCH 2019

माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओं की चिन्ता के स्तर का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ0 नीता गुप्ता
सहायक प्रोफेसर
आई0एफ0टी0एम0 विश्वविद्यालय
मुरादाबाद (उत्तर प्रदेश)

बिन्दु सिंह
शोधार्थिनी (शिक्षा शास्त्र)
आई0एफ0टी0एम0 विश्वविद्यालय
मुरादाबाद (उत्तर प्रदेश)

नारी ईश्वर का वरदान है। उसकी महत्ता को किसी भी समाज में नकारा नहीं जाता, क्योंकि उसका समाज के निर्माण में अमूल्य योगदान है। नारी के पास प्रकृतिप्रदत्त कुछ ऐसे गुण होते हैं, जो केवल नारी को ही प्राप्त हुए हैं। इसमें महत्वपूर्ण गुण है– सेवा भावना। नारी भिन्न–भिन्न रूपों में परिवार एवं समाज की सेवा करती है– एक माता के रूप में बच्चों की सेवा, पत्नी के रूप में पति की सेवा, बहू के रूप में परिवार के बड़े–बूढ़ों की सेवा। सेवा करना नारी–जीवन का स्वाभाविक गुण है। अब प्रश्न उठता है कि जब नारी जीवन भर लोगों की सेवा करती है, तो पुरुष और स्त्री में यह संघर्ष क्यों? क्या स्त्री और पुरुष सामाजिक जीवन की स्पर्धा के पात्र हैं? स्त्री और पुरुष परिवार रूपी रथ के दो पहिये हैं, जिनमें से यदि एक पहिया टूट जाय, तो रथ का चलना कठिन हो जाता है। नारी का काम यदि परिवार को बनाना है, तो पुरुष का काम उस परिवार का पालन–पोषण करना। पुरुष का जीवन में तीन स्त्रियों के साथ घनिष्ठ संबंध होता है– माता, पत्नी और पुत्री। ये तीनों ही स्त्रियाँ अपनी–अपनी भूमिका कुशलता से निर्वाह करते हुए लोगों के आदर, प्रेम और वात्सल्य की हकदार होती हैं। स्त्री के रूप में माँ का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण होता है। माँ नौ माह तक बच्चे को गर्भ में रखते हुए अपने कर्त्तव्य का पालन करती है। माँ शिक्षित हो या अशिक्षित, वह अपने बच्चे को पढ़ाना चाहती है। माँ के बलिदान की तुलना अन्य बलिदानों के साथ नहीं की जा सकती। माँ वह नारी है, जो बलिदान करती है, लेकिन उसकी कीमत नहीं मांगती।

भारतीय विद्यालयों में शिक्षिकाओं के सम्मुख अन्य चुनौति भी है। एक ओर वे शिक्षित हैं, इसलिए आधुनिकता की प्राथमिकतायें उनको प्रेरित करती हैं। यद्यपि पारम्परिक सामाजिक आग्रह उनकी दिशा एवं दृष्टि में गतिरोध प्रस्तुत करते हैं। कार्यस्थल की अनिवार्यताओं से वे अछूती नहीं रह सकतीं। किन्तु परिवार की पारम्परिक दृष्टि से मूलभूत परिवर्तन नहीं हो पाते। गृहिणी की भूमिका के पारम्परिक सन्दर्भ को अभी पूर्ण रूप से अप्रभावी नहीं बनाया जा सका है। इस विरोधाभास में शिक्षक महिलाओं के समक्ष चिन्ता

होना स्वाभाविक है, क्योंकि समाज, विद्यालय और परिवार के मध्य सन्तुलन बनाने के प्रयास में उनमें चिन्ता का स्तर बढ़ जाता है। अगर शिक्षिका चिन्तित रहेगी तो इसका कुप्रभाव उसके शिक्षण पर पड़ेगा, परिणामस्वरूप विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित होगी। एक शिक्षिका का चिन्ता का स्तर, उसके विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास को भी प्रभावित करता है।

2. अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व :–

शिक्षाकार्य को प्रभावशाली बनाने के लिए एक शिक्षिका का मानसिक रूप से स्वस्थ होना अति आवश्यक है, क्योंकि अगर शिक्षिका को मानसिक थकान होगी या उसका मानसिक स्तर सही नहीं होगा तो वह अपने शिक्षण–कार्य को भलिभाँति नहीं कर पायेगी। प्रायः देखने में आता है कि महिलाओं को शिक्षण कार्य करने से पूर्व अपने घर परिवार की भी देखभाल या व्यवस्था को बनाये रखने की जिम्मेदारी होती है। नारी ने शिक्षा प्राप्त कर भारतीय समाज को नई दिशा प्रदान की है। अगर नारी शिक्षित होगी तो विभिन्न क्षेत्रों में अपनी सेवा प्रदान करेगी। प्रायः देखने में आता है कि शिक्षण क्षेत्र में भी महिलाओं ने अपनी योग्यता का परिचय दिया है। फलस्वरूप शिक्षा के स्तर में सुधार हुआ, क्योंकि एक शिक्षिका बालक की विशेषताओं, आवश्यकताओं, क्षमताओं और योग्यताओं से पूर्ण रूप से परिचित होती है, जिस कारण वह विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सुधार करने की क्षमता रखती है।

परन्तु पुरूष–प्रधान समाज में शिक्षिकाओं के साथ सामान्य व्यवहार नहीं होता है। परिवार का बोझ व समाज का उस पर नियन्त्रण आदि महिलाओं के शिक्षण कार्य को प्रभावित करते रहते हैं। एक शिक्षिका अपना कार्य ठीक ढंग से तभी कर पायेगी, जब वह शरीरिक और मानसिक रूप से पूर्णतः स्वस्थ्य हो। परन्तु आज के परिप्रेक्ष्य में परिवार का बोझ, बच्चों की जिम्मेदारी, सास–ससुर की देखभाल, समाज के नियमों का पालन आदि करते–करते शिक्षिका का जीवन भी प्रभावित होता है, और घर के अतिरिक्त शिक्षिका को अपनी कक्षा के बालकों के दायित्व और विद्यालयों के प्रति अपने कर्त्तव्यों से भी दो–चार होना पड़ता है। विद्यालयों में राजनीति, प्रबन्धन से तालमेल, घर पर देर से पहुँचना जिस कारण परिवार के तानों का सामना करना पड़ता है, आदि कारणों से भी शिक्षिकाओं में चिन्ता का स्तर बढ़ जाता है। जब तक एक शिक्षिका पूर्ण रूप से स्वस्थ्य और चिन्ता मुक्त नहीं रहेगी, तब तक उसके विद्यार्थियों को उच्च शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त नहीं हो सकती है।

3. सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण :–

प्रस्तुत विषय पर कई शोद्यार्थियों ने शोध किये हैं, जिनमें एम0 पक्किम (1990), आर0के0 गुप्ता (1992), ए0 हसन (1992) तथा एन0 शर्मा (1992) के अध्ययन महत्वपूर्ण हैं। दूसरे वर्ग के अध्ययनों में एन0 मिश्रा (1969), बी मोहपात्रा (1988), एस0 नाईक (1992), एल रालटे (2000), एस0एच0वाई0 रावधर (2010) तथा ए0 मिश्रा (2015) महत्वपूर्ण हैं।

समस्या कथनः–

माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओं की चिन्ता के स्तर का तुलनात्मक अध्ययन।

भाब्दों का परिभाशिकरण :–

माध्यमिक स्तर :– माध्यमिक स्तर से आशय कक्षा 6 से 12 तक की शिक्षा प्रदान करने से है।

चिन्ता का स्तर–

आज के समय में शिक्षकों में प्रतिस्पर्धा इतनी बढ़ गई है कि वे हर समय अपने स्तर को

और ऊँचा उठाने के लिये शिक्षण के अतिरिक्त अन्य कार्यों में भी लगे रहते हैं। चिन्ता यदि सीमित मात्रा में हो, तब यह विद्यार्थियों के लिए लाभदायक होती है, परन्तु यदि चिन्ता का स्तर अत्यधिक बढ़ जाये, तब शिक्षकों में गम्भीर परेशानी उत्पन्न हो जाती है। शिक्षिकायें तनाव, अवसाद आदि का शिकार हो जाती हैं, जिसकी वजह से उन्हें चिन्ता का शिकार होना पड़ता है।

शोध विधि :– वर्तमान शोध हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

उपकरण :– प्रो0 ए0के0पी0 सिन्हा एवं प्रो0 एन0के0 सिन्हा द्वारा निर्मित मापनी।

न्यादर्श :– वर्तमान शोध हेतु 100 शिक्षिकाओं को लिया गया है।

चर :– स्वतन्त्र चर– शिक्षिकायें, आश्रित चर– चिन्ता

अध्ययन के उद्देश्य –

• माध्यमिक स्तर पर कार्यरत सरकारी एवं गैर सरकारी महिला शिक्षकों के चिन्ता के स्तर का तुलनात्मक अध्ययन।

• माध्यमिक स्तर पर कार्यरत सरकारी एवं गैर सरकारी ग्रामीण शिक्षिकाओं के चिन्ता के स्तर का तुलनात्मक अध्ययन।

• माध्यमिक स्तर पर कार्यरत सरकारी एवं गैर सरकारी शहरी शिक्षिकाओं के चिन्ता के स्तर का तुलनात्मक अध्ययन।

• माध्यमिक स्तर पर कार्यरत सरकारी एवं गैर सरकारी कला वर्ग की शिक्षिकाओं के चिन्ता के स्तर का तुलनात्मक अध्ययन।

• माध्यमिक स्तर पर कार्यरत सरकारी एवं गैर सरकारी विज्ञान वर्ग की शिक्षिकाओं के चिन्ता के स्तर का तुलनात्मक अध्ययन।

अध्ययन की परिकल्पनायें –

♦ माध्यमिक स्तर पर कार्यरत सरकारी एवं गैर सरकारी शिक्षिकाओं के चिन्ता के स्तर में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

♦ माध्यमिक स्तर पर कार्यरत सरकारी एवं गैर सरकारी ग्रामीण शिक्षिकाओं के चिन्ता के स्तर में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

♦ माध्यमिक स्तर पर कार्यरत सरकारी एवं गैर सरकारी शहरी शिक्षिकाओं के चिन्ता के स्तर में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

♦ माध्यमिक स्तर पर कार्यरत सरकारी एवं गैर सरकारी कला वर्ग की शिक्षिकाओं के चिन्ता के स्तर में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

♦ माध्यमिक स्तर पर कार्यरत सरकारी एवं गैर सरकारी विज्ञान वर्ग की शिक्षिकाओं के चिन्ता के स्तर में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

परिकल्पनाओं की व्याख्या एवं विश्लेषण

तालिका संख्या–1

माध्यमिक स्तर पर कार्यरत सरकारी एवं गैर सरकारी शिक्षिकाओं के चिन्ता के स्तर का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

शिक्षिकायें	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यान्तर	क्रान्तिक अनुपात	स्वतन्त्रांश	संख्या	सार्थकता
सरकारी	40	23.55	11.22	1.56	2.73	98		*
गैर सरकारी	60	19.35	9.66					

नोट - 0.01 स्तर पर * = 2.60, 0.05 स्तर पर ** = 1.97, सार्थक नहीं ***

व्याख्या :– तालिका संख्या 1 के अनुसार सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की चिन्ता के स्तर से प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक विचलन क्रमशः 23.55 व 19.35 (11.22 व 9.66) पाया गया है। जबकि दोनों समूहों के मध्य क्रान्तिक अनुपात 2. 73 प्राप्त हुआ है। आंकड़ों के विश्लेषण से प्राप्त क्रान्तिक अनुपात 0.05 व 0.01 स्तर के मानों से अधिक है। इससे स्पष्ट है कि सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की चिन्ता के स्तर में सार्थक अन्तर पाया जाता है। अतः हमारी परिकल्पना संख्या 1 स्वीकार की जाती है।

तालिका संख्या 2

माध्यमिक स्तर पर कार्यरत सरकारी एवं गैर सरकारी ग्रामीण शिक्षिकाओं के चिन्ता के स्तर का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

ग्रामीण शिक्षिकायें	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यान्तर	क्रान्तिक अनुपात	स्वतन्त्रांश संख्या	सार्थकता
सरकारी	23	24.84	12.28				
गैर सरकारी	27	19.98	9.25	3.03	3.55	48	*

नोट – 0.01 स्तर पर * = 2.64, 0.05 स्तर पर ** = 1.99, सार्थक नहीं ***

व्याख्या :– तालिका संख्या 2 के अनुसार सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की चिन्ता के स्तर से प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक विचलन क्रमशः 24. 84 व 19.98 (12.28 व 9.25) पाया गया है। जबकि दोनों समूहों के मध्य क्रान्तिक अनुपात 3. 55 प्राप्त हुआ है। आंकड़ों के विश्लेषण से प्राप्त क्रान्तिक अनुपात 0.05 व 0.01 स्तर के मानों से अधिक है। इससे स्पष्ट है कि सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की चिन्ता के स्तर में सार्थक अन्तर पाया जाता है। अतः हमारी परिकल्पना संख्या 2 स्वीकार की जाती है।

तालिका संख्या 3

माध्यमिक स्तर पर कार्यरत सरकारी एवं गैर सरकारी भहरी शिक्षिकाओं के चिन्ता के स्तर का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

शहरी शिक्षिकायें	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यान्तर	क्रान्तिक अनुपात	स्वतन्त्रांश संख्या	सार्थकता
सरकारी	27	25.48	11.69				
गैरसरकारी	23	20.26	9.95	1.74	4.22	48	*

नोट – 0.01 स्तर पर * = 2.64, 0.05 स्तर पर ** = 1.99, सार्थक नहीं ***

व्याख्या :– तालिका संख्या 3 के अनुसार सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की चिन्ता के स्तर से प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक विचलन क्रमशः 25.48 व 20.26 (11.69 व 9.95) पाया गया है। जबकि दोनों समूहों के मध्य क्रान्तिक अनुपात 4.22 प्राप्त हुआ है। आंकड़ों के विश्लेषण से प्राप्त क्रान्तिक अनुपात 0.05 व 0.01 स्तर के मानों से अधिक है। इससे स्पष्ट है कि सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की चिन्ता के स्तर में सार्थक अन्तर पाया जाता है। अतः हमारी परिकल्पना संख्या 3 स्वीकार की जाती है।

तालिका संख्या 4

माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी कला वर्ग की शिक्षिकाओं के चिन्ता के स्तर का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

कला वर्ग के शिक्षिकायें	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यान्तर	क्रान्तिक अनुपात	स्वतन्त्रांश संख्या	सार्थकता
सरकारी	24	21.22	9.28	2.98	2.71	48	***
गैर सरकारी	26	26.48	12.26				

नोट – 0.01 स्तर पर * = 2.64, 0.05 स्तर पर ** = 1.99, सार्थक नहीं ***

व्याख्या :– तालिका संख्या 4 के अनुसार सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की चिन्ता के स्तर से प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक विचलन क्रमशः 21.22 व 26.48 (9.28 व 12.26) पाया गया है। जबकि दोनों समूहों के मध्य क्रान्तिक अनुपात 2.71 प्राप्त हुआ है। आंकड़ों के विश्लेषण से प्राप्त क्रान्तिक अनुपात 0.05 व 0.01 स्तर के मानों से अधिक है। इससे स्पष्ट है कि सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की चिन्ता के स्तर में सार्थक अन्तर पाया जाता है। अतः हमारी परिकल्पना संख्या 4 स्वीकार की जाती है।

तालिका संख्या 5

माध्यमिक स्तर पर कार्यरत सरकारी एवं गैर सरकारी विज्ञान वर्ग की शिक्षिकाओं के चिन्ता के स्तर का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

विज्ञान वर्ग के शिक्षिकाओ	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यान्तर	क्रान्तिक अनुपात	स्वतन्त्रांश संख्या	सार्थकता
सरकारी	23	23.87	7.59	3.74	3.35	48	*
गैर सरकारी	27	24.55	11.33				

नोट – 0.01 स्तर पर * = 2.64, 0.05 स्तर पर ** = 1.99, सार्थक नहीं ***

व्याख्या :– तालिका संख्या 5 के अनुसार सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की चिन्ता के स्तर से प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक विचलन क्रमशः 23. 87 व 24.55 (7.59 व 11.33) पाया गया है। जबकि दोनों समूहों के मध्य क्रान्तिक अनुपात 3. 35 प्राप्त हुआ है। आंकड़ों के विश्लेषण से प्राप्त क्रान्तिक अनुपात 0.05 व 0.01 स्तर के मानों से अधिक है। इससे स्पष्ट है कि सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की चिन्ता के स्तर में सार्थक अन्तर पाया जाता है। अतः हमारी परिकल्पना संख्या 5 स्वीकार की जाती है।

निष्कर्ष :–

1. माध्यमिक स्तर पर कार्यरत सरकारी एवं गैर सरकारी शिक्षिकाओं की चिन्ता के स्तर में सार्थक अन्तर पाया गया।
2. माध्यमिक स्तर पर कार्यरत सरकारी एवं गैर सरकारी ग्रामीण शिक्षिकाओं की चिन्ता के स्तर में सार्थक अन्तर पाया गया।
3. माध्यमिक स्तर पर कार्यरत सरकारी एवं गैर सरकारी शहरी शिक्षिकाओं के चिन्ता के स्तर में सार्थक अन्तर पाया गया।
4. माध्यमिक स्तर पर कार्यरत सरकारी एवं गैर सरकारी कला वर्ग की शिक्षिकाओं के चिन्ता के स्तर में सार्थक अन्तर पाया गया।
5. माध्यमिक स्तर पर कार्यरत सरकारी एवं गैर सरकारी विज्ञान वर्ग की शिक्षिकाओं के चिन्ता के स्तर में सार्थक अन्तर पाया गया।

: सन्दर्भ सूची :

1. भार्गव महेश (1977) आधुनिक मनोविज्ञान– परीक्षण एवं मापन, आगरा, हरप्रसाद भार्गव, पृ0– 72
2. मुहम्मद सुलेमान (1995) :– शोध प्रणाली विज्ञान, शुक्ल बुक डिपो, पटना, पृ0– 119
3. राय पारसनाथ (1999), अनुसंधान परिचय, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा
4. सिंह, किरन और सिंह, एस0एन0 (2012), प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की अध्यापन अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन, लखनऊ, पृ0– 142–144, www.shodhganga.com
5. मालवीय, राजीव (2013), उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, पृ0– 597
6. पाठक, रमेश प्रसाद (2015), उदीयमान आधुनिक भारतीय समाज में शिक्षा, विकास पाटिलशिंग हाउस, प्रा0लि0, आगरा, पृ0–28
7. आस्थाना विपिन (2015), शिक्षा में मापन मूल्यांकन, विनोद प्रकाशन, आगरा, पृ0–440–445
8. कपिल एच.के. (2016)– अनुसंधान विधियाँ, हरप्रसाद भार्गव प्रिन्टर्स, आगरा, पृ0–75–76
9. गुप्ता एस0पी0 (2016), अनुसंधान संदर्शिका, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, पृ0– 313–324, 345,362
10. कपिल एच.के. एवं सिंह, ममता (2016), सांख्यिकी के मूल तत्व, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा, पृ0–57–60
11. मंगल, एस०के० और मंगल, शुभ्रा (2017), व्यावहारिक विज्ञानों में अनुसंधानों की विधियां, पी0 वी0 पब्लिकेशन, हरियाणा, पृ0–75, 80
12. शर्मा, आर0ए0 (2017), शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया, आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ, पृ0– 23–49, 194–215
13. मदान, पूनम (2014), भारत में शिक्षा व्यवस्था का विकास तथा समस्याएं, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा, पृ0– 317–335